संपादकीय

प्रिय पाठकों! अक्तूबर (2017) माह अन्य महीनों से अलग है। क्योंकि यह माह कई महत्वपूर्ण दिवसों एवं त्यौहारों को अपने साथ लाया है, जैसे—अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती, विश्व पर्यावास दिवस, दिवाली, आदि। इस माह के कई विविधताओं से परिपूर्ण होने के कारण इस अंक में भी विभिन्न लेखों एवं शोध पत्रों का समावेश किया गया है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती को देश भर में एक जन आंदोलन के रूप में 'स्वच्छ भारत अभियान' के रूप में मनाया जा रहा है। गाँधी जी ने कहा कि स्वच्छता ईश्वर की आराधना के समान ही है। उन्होंने तीन आयामों—स्वच्छ मस्तिष्क, स्वच्छ शरीर और स्वच्छ वातावरण को स्वच्छता के मानदंड में रखा। गाँधी जी के इन विचारों को मानव के वास्तविक जीवन में लाने का विशेष दायित्व शिक्षा का है। शिक्षा के द्वारा बालक अपने आस-पास के वातावरण के साथ-साथ विद्यालय में स्वच्छता के वास्तविक एवं यर्थाथवादी ज्ञान की रचना कर सकता है। जॉन होल्ट ने कहा कि बालकों द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में उत्पन्न समस्याओं का समाधान करने, उनके द्वारा स्वतंत्र विचार करने तथा स्वयं का दृष्टिकोण विकसित करने के लिए शिक्षक एवं विद्यालय को अवसर प्रदान करना होगा। इसे विस्तृत रूप में 'भारतीय परिप्रेक्ष्य में जॉन होल्ट के अनुभव, दर्शन और शैक्षिक विचारों की उपादेयता' पर आधारित लेख में दिया गया है। बालकों को अधिक ज्ञान प्राप्त करने अर्थात् संज्ञानात्मक विकास के लिए अधिक कुशल वयस्कों के साथ अंतर्क्रिया करनी होगी। जो वाइगोत्सकी के सामाजिक निर्माणवादी सिद्धांत का एक हिस्सा है। इसे आप 'बालक ज्ञान का स्वयं निर्माता' नामक लेख में व्यापक रूप से पढ़ सकते हैं।

मनुष्य को उत्कृष्ट सामाजिक जीवनयापन करने हेतु भाषा का विकसित एवं समृद्ध होना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि भाषा संवाद का माध्यम होने के साथ-साथ व्यक्ति के विचारों की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। बच्चों को भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सहज, स्वाभाविक और सार्थक बनाने के संदर्भ में घर, समाज, शिक्षक तथा विद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अत: प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों में भाषा शिक्षण के विविध पक्षों पर आलोचनात्मक चिंतन का लेख, 'प्राथमिक विद्यालयों में भाषा शिक्षण की वर्तमान स्थिति का आकलन' पढ़कर समझ सकते हैं।

शोध पत्र, 'नैतिक एवं संवेगात्मक विकास में मीडिया की भूमिका' में मीडिया को एक सामाजिक पहलू कहा गया है, जो विकास के लगभग सभी पक्षों को प्रभावित करता है। बदलते युग ने मीडिया, विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तक बच्चों की पहुँच को सुगम बनाया है और यही सुगमता उनके नैतिक एवं संवेगात्मक विकास में भी भूमिका निभाती है। इसके अतिरिक्त शिक्षक के कार्य के ढंग का भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अत: शोध पत्र 'स्व-मूल्यांकन आधारित प्रतिपुष्टि का शिक्षकों के शिक्षण पर प्रभाव का अध्ययन' में शिक्षक के व्यवहार तथा शिक्षण कार्य का स्व-मूल्यांकन कर स्वयं की शिक्षण प्रक्रिया में सुधार करने तथा प्रभावी शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने पर विशेष बल दिया गया है। बच्चों को कला के माध्यम से

अन्य विषयों को समझने की स्वतंत्रता दी जाए तो वे सभी विषयों को खुद करके अर्थात् प्रयोग कर समझ सकते हैं। जिससे वे रटने के बजाए समझने को प्रेरित हो सकेंगे। इसी उद्देश्य को आधार बनाते हुए लेख 'कला का अन्य विषयों से सहसंबंध— एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' दिया गया है।

जिस प्रकार परिवार समाज की महत्वपूर्ण इकाई है, उसी प्रकार वह विद्यालय का भी एक ज़रूरी घटक है। क्योंकि अभिभावकों के सहयोग के बिना विद्यालय विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास नहीं कर सकता। अत: शिक्षा का अधिकार अधिनियम— 2009 में बालकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में विद्यालयों के साथ-साथ अभिभावकों की भी ज़िम्मेदारी सुनिश्चित की गई है। इसी बात पर शोध पत्र 'विद्यालयेत्तर विमर्श और अभिभावक' में विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। समावेशी शिक्षा आज की आवश्यकता है, जिसमें सभी बच्चों तक शिक्षा की पहुँच तथा शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना प्रमुख ध्येय है। इसी कड़ी में शोध पत्र 'शारीरिक रूप से दिव्यांग विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का अध्ययन' यह दर्शाता है कि शारीरिक रूप से दिव्यांग विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। औपचारिक शिक्षा के अंतर्गत विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकें अधिगम के एक स्रोत के रूप में कार्य करती हैं। इन पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व शैक्षिक स्थिति का चित्रण किया जाता है ताकि महिलाओं के विभिन्न क्षेत्रों में दिए गए योगदान से समाज विशेषकर विद्यार्थियों को जागरूक किया जा सके। इसी शृंखला में मध्य प्रदेश की कक्षा सातवीं की 'हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक '*भाषा भारती*' में महिलाओं के प्रतिनिधित्व का अध्ययन' पर आधारित शोध पत्र दिया गया है।

सरकार द्वारा बच्चों की विद्यालय तक पहुँच तथा उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के तमाम प्रयास किए जा रहे हैं। लेकिन विद्यार्थियों द्वारा बीच में ही पढ़ाई छोड़ने अर्थात् विद्यालय त्यागना (Drop Out) एक गंभीर समस्या बनी हुई है। इसी संदर्भ में शोध पत्र 'मुस्लिम विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी अपव्यय की समस्या— एक साहित्यिक सर्वेक्षण' दिया गया है। जो मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों की विद्यालयी अपव्यय की स्थिति का अवलोकन एवं इसके कारणों को जानने के प्रयास पर आधारित है। किन्हीं व्यक्तिगत या परिस्थितिगत कारणों से कोई विद्यार्थी औपचारिक शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाता है, ऐसी स्थिति में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से वह अपनी आजीविका के साथ-साथ पढ़ाई भी जारी रख सकता है, क्योंकि दूरस्थ शिक्षा लोगों की आजीविका को उच्चतर करने हेतु अपनी शिक्षा जारी रखने में सहायता करती है। अत: 'श्रमजीवी जनता की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पर प्रतिपुष्टि— एक अध्ययन' नामक शोध पत्र में विभिन्न व्यावसायिक व्यक्तियों की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पर प्रतिपुष्टि प्राप्त कर इसमें बेहतरी की आवश्यकताओं को ज्ञात कर सुझाव दिए गए हैं।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख एवं शोध पत्र प्रकाशन हेतु भेजेंगे। आप अपने लेख एवं शोध पत्र हमें ई-मेल journals.ncert.dte@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

अकादमिक संपादकीय समिति